मानव मन्दिर

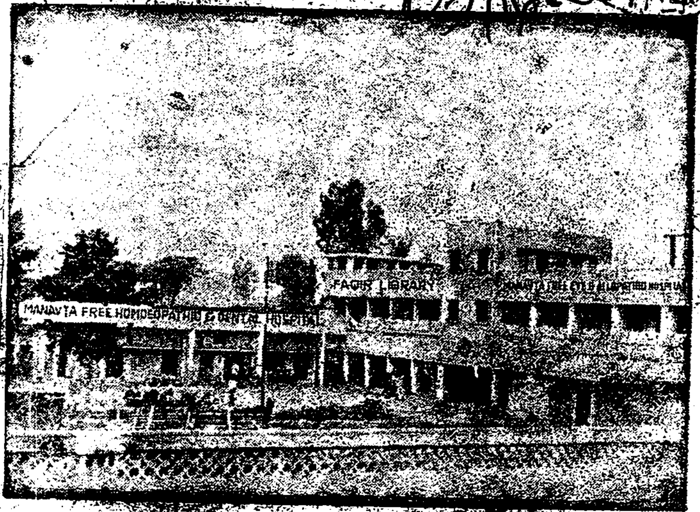

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट

सतहरी रोड, होशियारपुर

FORM I

(See Rule 8)

Place of Publication	**Hoshiarpur**
Date of Publication	**10th of every month**
Periodicity of Publication	**Monthly**
Printer's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Publisher's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
tor's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.**
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir or partners or shareholders, holding more than one percent of the total capital.	**Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.**

I. M. R. Bhagat hereby decclare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated : 7-8-79 *Signature of Publisher*

Printed and Published by M. R. Bhagat at Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur. for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

printing by R.K Sood

Radha Swami

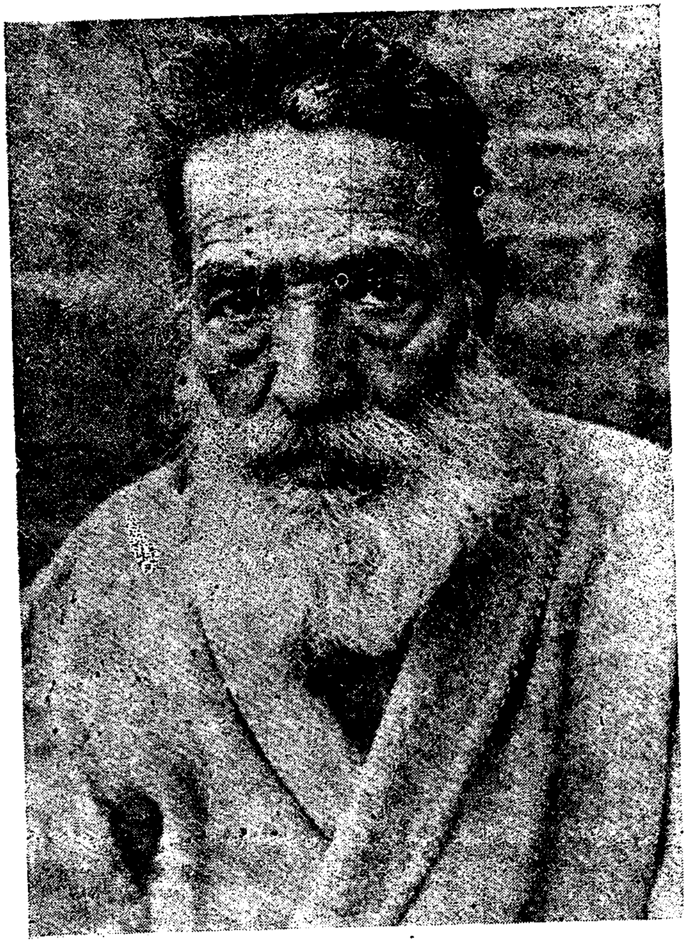

परमसन्त, परमदयाल
फकीर चन्द जी महाराज

मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :— एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटायर्ड)

वर्ष 7	वीरवार 10 जुलाई 1980	संख्या 3

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

लोक परलोक सुधार

बैसाखी के अवसर पर परम दयाल जी महाराज का सत्संग मानवता मंदिर होशियारपुर ९-४-१९८०

उठ जाग सवेरा हो गया

गई स्याही आई सफ़ेदी-अब क्यों सोवे भाई।
रात बीत गई सूरज निकला-त्याग नींद अलसाई॥

ऊजले केस की पत कुछ रखले-चौथा पन जब आया।
चलने की अब कर तैयारी-जग बादर की छाया॥

हँसा फूल हँस कर मुरझाया-बास सुबास त्यागी।
हँसी ठठोल का समय नहीं है-हो गुरु पद अनुरागी॥

कोयल कूक सुना कर चुप हुई-मौन अवस्था धारी।
वाद विवाद से मन को रोक ले-शान्ति का अधिकारी॥

सुमर सुमर भज नाम गुरु का-नाम सन्त मत सारा।
राधा स्वामी की दाया से-जा भव जल पारा॥

दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज का ये शब्द सुना, इस को मैं अपने ऊपर घटाता

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

हूँ और अपनी आत्मा से पूछता हूँ । तू जागा या नहीं जागा ? 94 साल का हो गया, आयु बीत गई, अब विश्वास है कि प्रकृति के नियमानुसार जो आया वह गया । दाता दयाल जी महाराज का जागने से क्या मतलब है मुझे नहीं पता । वह कहते हैं कि बुढ़ापा आ गया अब तू जाग । सब बूढ़े जागते हैं । अपनी ओर से सब जाग रहे हैं । जागने का यह मतलब तो नहीं हो सकता, जागने से समझ रहती है अकल, दिमाग़ ठीक रहता है । आदमी को होश रहती है सोच समझ से काम करता है और सोने में यह गाफिल हो जायेगा या स्वप्न में तरह-२ के तमाशे देखेगा ।

"उठ जाग सबेरा हो गया ।
गई स्याही आई सफेदी-क्यों सोवे भाई ।
रात बीत गई सूरज निकला-त्याग नींद अलसाई ।।

जागने में क्या होता है । इन्सान की अक्ल व होश कायम रहती है और नेकी बदी को समझ सकता है । जाग्रत अवस्था में मैं जाग रहा हूं तुम जाग रहे हो मैं कह रहा हूं तुम सुन रहे हो तो मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तू बता कि क्या

तू जागा ? बुढ़ापा आ गया। तू कैसे जागा ? दाता दयाल जी का क्या मतलब है मुझे नहीं पता। मेरे विचार में जागना यह है कि फकीर चन्द, होश कर तूने चले जाना है, एक दिन शरीर छूट जायेगा। फिर कहां जायेगा। इस असलियत को जानना कि यह दुनियां तेरी नहीं है। तू कहां से आया है और फिर कहाँ चला जायेगा। तू है कौन ? अगर तुमने यह नहीं जाना तो जो जिन्दगी तुमने गुज़ारी है यह तो सोये हुए गुज़ारी है अर्थात बिना होश के व समझ के गुज़ारी है।

एक आदमी का एक लड़का मर जाता है वह पीटता है औरतें सुबह से सांयकाल तक पीटती हैं उनका जो पीटना है वह उनका सोना है। क्योंकि उन्हे यह ज्ञान नहीं है कि जो आया है उसने जाना ही है। मैंने जागने को क्या समझा कि दुनिया में जो कुछ हो रहा है उसको समझो और विचारो। अगर कोई घाटा पड़ जाता है, कोई मर जाता है या कोई नुकसान हो जाता है तो जो उसमें सुखी व दुःखी होता है वह माया, मोह या अज्ञान रूपी नींद में सोया हुआ है।

क्योंकि उसे इस बात का ज्ञान नहीं है कि वह तो उसके अपने कर्मों का फल है । जो तुमने किया है उसे भोगो या अगर यह समझते हो कि जिसने यह दुनिया बनाई है वह जालम है तो उसके चक्कर से निकल जाओ । उसका चक्कर क्या है ? ये तुम्हारा मन । इस मन के चक्कर से निकल जाओ ! मैंने क्या समझा कि मैं कौन हूं ? प्रकृति के मेल से प्रकाश का ज़मीन पर आ कर किसी स्थूल वस्तु में प्रवेश करके जिस तरह वृक्षों में फल पत्ते पैदा हो जाते हैं इस तरह जब हम दुनियां में आते हैं तो हमारे अन्तर एक मैंपना पैदा होता है और हम इस मन, चित, बुद्ध और अहंकार के चक्कर में फँसे रहते हैं । मेरा बाप, मेरा भाई, मेरा चाचा, मेरा गुरु, मेरा मज़हब मेरा धर्म, मेरा कर्म, इसमें फँसे रहते हैं । इस फँसने से क्या होता है ? आदमी दुःख सुख को महसूस करता है । और जब तक हमारे अन्तर इस दुख सुख को महसूस करने की चीज़ नहीं मिटेगी और हमें इस बात का ज्ञान नहीं होगा कि हम कौन हैं, कहां से आये हैं और कहां

जायेंगे। लाख कोई सारी आयु अभ्यास करता रहे उसका बेड़ा पार नहीं होगा। मैं अपनी ज़िन्दगी को देखता हूँ। जवानी तो मस्तानी रही, स्त्री से भोग भोगे, नौकरी की, बसरे बग़दाद गया। मगर वह क्या था। वह सोना था। दाता के चरणों में चला गया, दाता ने दुःखों से बचाना चाहा मगर मैं नहीं बच सकता था। उन्होंने दया कर के मुझे यह काम दे दिया। आप लोगों की संगत से मेरी आंख खुल गई। यह बिश्वास हो गया कि जो कुछ मन में फुरता है यह माया है, संस्कार है। मन के रूप को समझ जाने का नाम है जागना। अगर बुढ़ापे में यह बात समझ में नहीं आती तो लाख अभ्यास किये हुए हैं दान किये हुए हैं जो कुछ भी किया हुआ है तुम इस के चक्कर से निकल नहीं सकते और ज्ञान के बिना तुम भव सागर से पार नहीं जा सकते।

गुरु ज्ञान न पायो री सखी,
तेरी ऐवे उमर विहानी।

तो जागना क्या है? इस बात का अनुभव

करना कि मैं कौन हूँ और कहाँ जाऊँगा जो कुछ मैंने अनुभव किया है वह मैं कह सकता हूँ ! जब मैं मन को छोड़ जाता हूँ तो आगे है प्रकाश और शब्द । वहां मैं उस वस्तु को ढूँढ़ता हूँ जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है तो मैं ही नहीं रहता, सब कुछ भूल जाता हूँ । अपनी भी किसी बात की होश नहीं रहती । इस तरह अभ्यास करने के बाद अगर वहां जा कर मैं कुछ बन गया होता तो मुझ में ताकत होनी चाहिए कि मैं कुछ कर सकूं । किसी का कुछ बना सकूं । मैं नहीं कर सकता । मैं ही क्या अगर ये दूसरे गुरु कुछ कर सकते होते तो अपने लड़कों को न मरने देते या आप ही बीमार न होते । तो मैं किस परिणाम पर पहुँचा कि मैं चेतन का बुलबुला हूँ । कुदरत की Nature में हरकत होती है । हरकत जहां है वहां शब्द पैदा होता है । उसमें जो चेतना आती है उसका नाम है सुरत । वह सुरत उतरती-२ यहां आ गई । कोई किसी चोले में, कोई किसी चोले में । समय आता है उसे ख्याल आता है भई, मैं कौन हूँ, मैंने यह समझा कि मैं एक चेतन का

बुलबुला हूँ। जब शरीर, मन सब कुछ भूल जाता है, अपने आप में चला गया तो उस समय तो मैं गुम हो जाता हूँ, अनामी हो जाता हूं।

जब गुप्त, तब रहा अनाम,
जब प्रगट, तब धरिया नाम।

तो दाता दयाल के शब्द को सुन कर यह सवाल पैदा हुआ कि क्या तू जागा है ? मैं यह जागा हूँ। मुझे यह समझ आई है कि एक तत्व है कोई किसी नाम से याद करता है और कोई किसी नाम से याद करता है। उसीकी हरकत है। उसी की हरकत से दुनियां बनती है। और जब शब्द प्रगट होता है तो हमारे शरीर के अन्दर हमारी 'मैं, आ जाती है। उस "मैं" का सारा खेल है। मैं यह जागा हूँ और चाहता हूं कि अगर मैं ग़लत हूँ तो दूसरे महापुरुष मेरा खण्डन करें। मैं दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही Final है। जिस तरीके से मैं जागा हूं और जो जाग्रत मैंने समझी है। मैंने वह बताई है। मैं मर जाऊँगा दुनियां पीछे से कहेगी कि बाबा ज्योति जोत समा गया। वह ग़लत होगा

कोई ज्योति ज्योत समाया या न समाया उनके पास क्या सबूत है कौन कहां गया।

जो मैं जागा वह आप लोगों को बता दिया। बाकी रह गया लिखा हुआ है कि नाम जपते रहो। मुझे कोई बताये तो सही 24 घण्टे कौन नाम जप सकता है, सुमिरन कर सकता है, बातें करना एक और बात है। सुमिरन करना यही है कि हर समय यही विचार रहे कि वह एक मालिक है हम उसके चेतन के वुलबुले हैं और खेल करते हैं, इस बात का अगर ठीक विश्वास हो जाये वह 24 घण्टे का सुमिरन है। राधास्वामी 2-या राम-2 जपने की कोई जरूरत नहीं। यह उन्हें करना पड़ता है जिनका मन इस ज्ञान की तरफ नहीं जाता। उनके लिए सुमिरन करना ज़बान से या ख्याल से राधास्वामी 2-या राम-2 जरूरी है।

उजले केस की पत कुछ रख ले, चौथा पन जब आया।
चलने की कर अब तैयारी, जग बादर की छाया।
हंसा फूल हँस कर मुरझाया बास सुबास त्यागी।
हंसी ठठोल का समय नहीं है, हो गुरु पद अनुरागी।

कोयल कूक सुनाकर चुप हुई, मौन अवस्था धारी।
वाद विवाद से मन को रोक ले, शान्ति का अधिकारी।
अब वाद विवाद मेरा खत्म हो गया।
"सुमिर, सुमिर भज नाम गुरु का नाम संतमत सारा'
राधास्वामी की दया से, जा भव जल पारा।

नाम गुरु का यह नहीं कि कोई फकीर चन्द २ ही गाता रहे। नाम है क्या? कि हम कौन हैं। सुरत का शब्द में लय हो जाना अर्थात गुम हो जाना और अपनी हस्ती खो देना। अगर मेरी 'मैं' बिल्कुल खत्म हो जाये तो फिर क्या है। सुरत जो है वह जहां से निकली थी उसमें लय हो गई। अपनी हस्ती खो गई। इसी का नाम राधास्वामी है।

"राधा आद सुरत का नाम,
स्वामी आद शब्द पहचान।

यह जो पांच नाम हैं यह दुनियां के लिए हैं। यह पांच नाम संसार के लिए जरूरी हैं। मगर वह पांच नाम या राधास्वामी नाम जपने से नहीं बल्कि इन नामों की जो हालत है, उसका अनुभव करने का नाम है अभ्यास।

जो कुछ मैं जागा वह बता दिया। जाग जाग कर यह पता चला मैं कौन हूँ ? मैं एक चेतन का बुलबुला हूँ। सब बुलबुले हैं। हम में एक 'मैं' आई हुई है, वह मारती है। वह मालिक एक एक ताकत है। जब तक 'मैं, है, तब तक तू है। अपनी तरफ से तो सब जाग रहे हैं। मगर अपने आपकी समझ के बिना वह मोह माया की नींद में सो रहे हैं।

राधास्वामी।

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक १०-४-१९८०

तू निज स्वरूप को क्यों भूल गया ।

भूल गया क्यों भूल गया,
तू निज स्वरूप क्यों भूल गया ।

दृष्टि पड़ी और पर तेरी,
और का रूप प्रकाशा ।

दृष्टि सृष्टि का बढ़ा पसारा,
मन मे भरम विकासा ।

दरपन मध्ये तेरी छाया,
छाया देख भुलाना ।

बाहर मुखी भ्रान्ति चित बाढ़ी,
अपना पराया ठाना ।

एक हुआ फिर दो बन आया,
द्वैत अद्वैत की बानी ।
एक एकाई दहाई सैकड़ा,
अगनित भर्म कहानी ।
असल नकल सच्चा और झूठा,
लख लख अलख लखाया ।
लख लख अलख लाख लख पाया,
सोचा पढ़ा लिखाया ।
आप आप को आप पिछानो,
गुरु ने दिया संदेशा ।
कहा और का नेक न मानो,
राधास्वामी का उपदेसा ।

मुझे अच्छी तरह से याद है ये शब्द दाता दयाल ने 1919 में मुझ को लिखा था। जब मैं उन की देह से उन को अपने विचार से परमात्मा या गुरु या राम मानता था, उन की स्तुति करता और उन से बहुत प्रेम करता था। अब आप लोगों की दया से मुझे इस शब्द का अर्थ पता लगा। जो अर्थ दुनिया समझती है वह मैं नहीं मानता। दाता दयाल मुझे लिखते हैं तू अपने रूप को क्यों भूल गया।

तू निज स्वरूप को क्यों भूल गया।
दृष्टि पड़ी और पर तेरी, और का रूप प्रकासा।
दृष्टि सृष्टि का बड़ा पसारा, मन में भरम विकासा।

आहा हा ! पिछला वह प्रेम और उस की लहर जो मेरे अन्तर थी वह याद आती है। यह ठीक है कि उस समय मैं इस अज्ञान के प्रेम में खुशी व आनन्द लेता था मगर शान्ति नहीं थी और वह खुशी और आनन्द जो मैं लेता था वह भी स्थाई नहीं था। दुनिया कह देती है कि जो कुछ है हम ही हैं मगर निज स्वरूप है क्या ? किसी ने देखा है ? निज स्वरूप मेरी समझ में वह जगह है जहां मैं ही नहीं, बस Oneness समझ लो परम तत्व समझ लो। जहां न 'मैं' है न 'तू' है और यही बात राधास्वामी दयाल ने जेठ महीने में लिखी है कि हमने जाना कहां है। जहां हम पहुंच जाएंगे वहां न सतनाम, न सतलोक, न अनामी तीनों नहीं हैं। हमारा यह परिणाम है। बाणी खोल कर पढ़ लो कि इस का क्या मतलब है कि वहां कुछ नहीं, अब अगर यह कहा जाये कि वहां कुछ नहीं तो मैं कहता हूं कि चाहे स्वामी जी थे या कोई और था उन्होंने भी

रास्ते को साफ नहीं किया। कबीर साहिब किसी सीमा तक कर गये कि जहां हमने पहुंचना है वह क्या चीज है या जहां हमारा पूर्ण पुरुष है जिस के लिये हम सोचते हैं वह कहां है। वह कहते हैं :—

सखिया वा घर सब से न्यारा,
जहं पूरन पुरुष हमारा।
जहां पुरुष तहवां कछु नाहि,
कहे कबीर हम जाना।
हमरी सैन लखै जो कोई,
पावै पद निरबाना।

मगर जो कोई भी उस राम को मिलने के लिये निकला पहले सब ने राम को अपने से अलग समझा। जैसे दाता दयाल लिखते हैं।

दृष्टि पड़ी और पर तेरी और का रूप प्रकासा।

तुमने किसी को और या दूसरा समझ लिया, उसको देवी, कृष्ण, राम या गुरु के रूप में मान लिया, इस तरह दूसरों को वह समझ लिया, फिर दिल में भिन्न २ प्रकार के वहम पैदा हो जाते हैं। मेरे भी होते थे। इसी वास्ते दाता दयाल ने जब मैं

ग़लती पर था तो मुझ को कहा कि तू निज स्वरूप को क्यों भूल गया । यदि दाता दयाल ने निज स्वरूप को न समझा हुआ होता तो वे ऐसा न लिखते । मगर दाता का निज स्वरूप से क्या मतलब है मुझे पता नहीं, मैं नहीं जानता । अगर दाता ने निज स्वरूप को समझ लिया था तो क्या वे कुछ कर सकते थे ? क्या वे अपनी धाम को बचा सके ? उनके अपने ही रिस्तेदार थे क्या वे अमर हो सके ? नहीं ! यह दुनिया में जितना आज कल गुरु मत है ये सब पैसे और इज्जत के लिये है और कुछ नहीं । चलाने वाले ने तो सच्ची नीयत से चलाया बाकी हम लोगों ने जो गुरु बने चाहे मैं हूं चाहे दाता दयाल थे या कोई भी था, मुआफ करना मेरी बात को, हम सब ने जो काम किया अपनी ज़ाती ग़रज़ और मान के लिये किया, अपनी इच्छा के आधीन किया, बात यह सच्ची है यही बात दाता ने पिछली आयु में लिखी थी कि फकीर ! सत्संग कराना उपाधि है, कोई शक नहीं हजूर महाराज ने मुझे कहा था कि पंथ की तालीम फैलाना मगर मेरी अपनी भी इच्छा थी, ये जो कुछ मैं करता हूं मैं भी अपने ही कर्म का मारा हूं या ही

फिरता हूं कि नहीं ? दिन को चैन नहीं, रात को चैन नहीं ।

निज स्वरूप यदि किसी ने जाना है तो क्या वो अपने लिये ही कुछ कर सकता है ? स्वामी जी जिस ने निज स्वरूप को जाना यदि वे कुछ कर सकते होते तो वे दो साल बीमार क्यों हुये ? तो निज स्वरूप जो मैं ने समझा वो मैं दुनिया को कहता हूँ कि जो कुछ निज स्वरूप कबीर ने लिखा है यह उन का अनुभव है । मगर यह पूरा सत् नहीं है । क्योंकि दर असल किसी को पता नहीं कि वहां क्या है । यह केवल इन्सान के अपने ही मन का बिचार है कि उस ने उस मालिक को ऐसा समझ लिया । और मैं ने क्या समझा कि मैं कौन हूं, मैं एक चेतन का बुलबुला हूं । जिस प्रकार की प्रकृति ने मेरा शरीर बनाया जिस प्रकार के उस के अन्तर ग्रहों के असर हैं उसी प्रकार का काम करने के लिये मेरा शरीर और मेरा दिमाग मजबूर है । मैं लाख कोशिश करूं मैं उस को बदल नही सकता । यदि बदल सकता हूं तो केवल इतना कि संसार को भूल जाऊं । Oneness आ

जाये । क्या आ जाये ? पता नहीं । जब आप ही नहीं रहा तो मैं क्या करूं ।

एक कहूं ता है नहीं, दो कहूं तो गार ।
जैसा है वैसा रहे, कहें कबीर विचार ।

वहां न एक है, न दो हैं न धर्म है न कर्म है, वो क्या है । जब इन्सान वहां जाता है अपनी हस्ती खो जाता है सुरत आप ही नहीं रहती, हम ही नहीं रहते । जब होश आती है तो फिर हम में अक्ल आ जाती है । कहीं हम ऊपर की बातें करते हैं कहीं दुनियादारी की बातें करते हैं, जिस जिस प्रकार की प्रकृति किसी की बनी हुई है उस २ प्रकार के कर्म करने के लिये वो मजबूर है । जिस के जैसे ग्रह पड़े हुये हैं वो वैसा काम करेगा । अफसोस ! दाता हैं नहीं । यदि होते तो उन से पूछता कि आप का निज स्वरूप से क्या मतलब है । निज स्वरूप का वर्णन सार वचन में भी है । मुझे नहीं पता राधास्वामी दयाल को निज स्वरूप क्या मिला । मैं ने प्रण किया था कि जो कुछ मेरा अनुभव होगा मैं बता जाऊंगा । तो मैं बताये जाता हूं कि निज स्वरूप

क्या है ? जो संतोंका निज स्वरूप है उस का मुझे पता नहीं, मूँह से हम यदि कह दें कि हम अजर अमर और अविनाशी हैं। इस का प्रमाण क्या है ? मैं यह समझता हूं जिस व्यक्ति को यह ज्ञान हो जाता है तो जैसे बूंद पानी के समुद्र में मिल जाती है, बूंद नहीं रहती समुद्र हो जाती है फिर वह क्या कहे समुद्र क्या है। तो मैं कौन हूँ ? वो बोल नहीं सकता वो तो खत्म हो गया और यही बात स्वामी जी ने कही है—

सुन री सुरत तूं मुझ से अपना भेद
तू मुझ में थी सदा अभेद।

जिस प्रकार मक्खन दूध में अभेद रहता है। जब उस में हरकत होती है तब फिर मक्खन बनता है। ऐसे ही एक तत्व है उस में जब हरकत होती है तो यह शब्द और प्रकाश का पैदा होना स्वाभाविक है। जहां हरकत है वहां अवाज़ है और रोशनी है। इस का होना ज़रूरी अमर है। यह सारी ज़मीन चक्कर खाती है इसमें भी अवाज है। इसी वास्ते इस का नाम विराट्

पुरुष रखा हुआ है। मगर चूंकि हमारे कान उस के अनुकूल नहीं हैं इस वास्ते हम उस को सुन नहीं सकते। मैं हाथ हिलाता हूं मेरे हाथ के हिलने से रोशनी पैदा होती है वो आप को नजर नहीं आती अगर साईंस इन बातों को साबत करती है। दाता लिखते हैं।

तू निज स्वरूप क्यों भूल गया।

निज स्वरूप मैं ने क्या समझा ? मैं एक चेतन का बुलबुला हूं। जो कुछ हो रहा है यह मेरा नहीं ये सब प्रकृति (Nature) का खेल व काम है, कहीं स्थूल मादा काम करता है, कहीं सूक्ष्म और कहीं कारण मादा काम करता है। सब उस का खेल है। ताकत उस ताकत में है हम सब (Tool) हैं, यंत्र हैं। जैसे ताकत हाथ में है चलती कलम है। मेरी समझ में ये बात आती है। मैं इस वास्ते जोरदार शब्दों में कहता हूँ कि दूसरे महात्मा दुनियां को सीधे रास्ते पर लगाएं। हम सब ही हैं तो चेतन के बुलबुले मगर एक 'मैं' आई हुई है। उस मैं की वजह से दुनियां में

कितने झगड़े हो रहे हैं। ये है क्या ? ये अज्ञान और भ्रम है, माया है। महजबों की या हकीकत का असली पता न होना ही सब जगह मुसीबतों और दु:खों का कारण है। हमारे घरों में भी यही मुसीबत का कारण है।

> दृष्टि पड़ी और पर तेरी और का रूप प्रकास
> दृष्टि सृष्टि का बड़ा पसारा, मन में भरम विकासा,
> दर्पण मध्ये तेरी छाया, छाया देख भुलाना।

मन को जितनी फुरनाएं रूप रंग और दृष्य हैं ये सब छाया है, माया है असलीयत नहीं है। अफसोस ! कोई महात्मा, कोई धर्म, कोई मज़हब सच्ची बात नहीं बताता। कर्म के फल से कोई किसी को नहीं बचा सकता। ये न इन गुरुओं को और न किसी को छोड़ेगा। अपनी इज्जत और मान के लिये ये हेरा फेरी करते हैं। व्यक्तिगत रूप में, घरेलु तौर से और राजनैतिक रूप में सभी जगह हेरा फेरी है। यहां कहीं भी सचाई नहीं है। जब ये बात है तो हम कैसे आशा कर सकते हैं कि दुनिया में शान्ति आयेगी। दुनिया में मुसीबत आयेगी। ये मेरा अनुभव है और शास्त्र

भी यही कहते हैं। हिन्दुस्तान फिर भी कुछ बच पायेगा क्योंकि इस में कुछ सच्चाई है।

बाहर मुखी भ्रान्ति चित बाड़ी अपना पराया ठाना
एक हुआ फिर दो बन आया, द्वैत, अद्वैत की बानी
एक इकाई दहाई सैंकड़ा, अनगिनत भरम कहानी
असल नकल, सच्चा और झूठा,
लख लख अलख लखाया
लख लख अलख लाख लख पाया।
सोचा पड़ा लिखाया।
आप आप को आप पहचानो।
गुरु ने दिया संदेशा
कहा और का नेक न मानो
राधास्वामी का उपदेस।

वह कहते हैं "आप आप को आप पहिचानो" संत मत वालों ने अपने आप को क्या पहचाना? वे कहते हैं हम ही सब कुछ हैं। मैं कहता हूं ऐ इन्सान! तू क्या समझता है अपने आप को, तेरी हस्ती क्या है? तू अपने मन के हंअकार में आ कर विचार को ताकत से जो इच्छा चाहे चार दिन के लिये तमाशा कर जा मगर तू एक चेतन का बुलबुला है। जब तक तुम को अपनी

हस्ती का पता नहीं है तुम को जन्म लेना पड़ेगा। ये दूसरी बात है कि इस लोक में न लो, महा सुन्न में लो, सत लोक में लो कहीं भी लो। तो वह निज स्वरूप मैं ने क्या समझा कि मैं एक चेतन का बुलबुला हूं। जब तक शरीर में अपना पराया सब का बोध भान है तो फिर मेरा अब मार्ग क्या हुआ।

भक्ति पंथ तू धार तेरे भले की कहूं।

जब तक होश है शरीर का कारोबार है, मेरा भक्ति पंथ है। किस का ? कि मैं चेतन का बुलबुला हूँ जिस से निकला हूं अपने आप को उस के अर्पण करता रहता हूँ।

मगर दुनिया के काम बुद्धि व होश से करता पागल बन के नहीं फिरता। ज़माने और समय के अनुसार होश से काम करता हूं। मुझे शान्ति केवल शरणागतम् में मिली। वहां तो केवल एक एक दो मिन्ट रहता हूँ। यदि वहां ज्यादा रहू तो जिन्दगी नहीं रह सकती। नीचे आई आत्मा कह देते हैं और नीचे आई मन कह देते हैं और नीचे आई जीव कह देते हैं मगर अनुभव हो गया है कि

हरकत हुई, प्रकृति का मेल हो गया, उस में शूं शूं पैदा हुई। उस आद हरकत को सुरत कह देते हैं। अगर कोई ये समझे कि किसी ने निज स्वरूप को समझ लिया है और उस ने अपना कर्म नहीं भोगा ये ग़लत है। यहां राधास्वामी दयाल दो साल तक बीमार रहे। दाता दयाल को भी आखरी १५ दिन तक बीमारी रही और धाम उजड़ गई। कबीर साहिब दस साल दर्द गुर्दा से बीमार रहे। ये मैं ने स्वयं एक अंग्रेजी पुस्तक में पढ़ा है जिस को लिखने वाला इरान देश का रहने वाला था और अन्त समय में कबीर साहिब के साथ रहा था उस की लिखी हुई पुस्तक का अनुवाद था इस ग़लत गुरु मत ने हम सारी दुनिया को पागल किया हुआ है। इन्सान दुनिया की आशाओं का मारा हुआ है। अरे बाबा! जो कर्म तुमने किये हुये हैं वो भुगतोगे। जब ये सन्त भुगत गये तो हम और तुम कौन हैं। किस लिये इन दुःखों के मारे गुरुओं के दरवाजों पर जा कर नाक रगड़ते हो कि तुम को पुत्र दे दें, हमारी बीमारी दूर हो जाये, तुम्हारा यह हो जाये, वो हो जाये ये पागल

पन है, हमारा अज्ञान है (दुनियां की इच्छाएं हैं) जब कि सभी जानते हैं कि ये दुनियां हमारी नहीं है हम यहां चन्द सालों के लिये आते हैं। चाहे कोई सन्त था चाहे अवतार था या कोई था सब ही को यहां से जाना पड़ा। तुम लोग तो गुरुओं के पास या मन्दिरों में दुनिया की आशाओं के लिये जाते हो जब तुम को दु:ख होता है। तो वो तो होगा ही। अगर मैं जाऊँ तो मुझे भी होगा ये तो संसार ही ऐसा है। कोई गुरु किसी को कुछ नहीं देता, न देवी देती है न और कोई देवता देता है केवल तुम्हारा अपना ही विश्वास होता है। Surrender to him in any form you like, उस को मत समझो वो वह गुरु है। यह विश्वास करो कि तुम उस के हो वो तुम्हारा है तो ज़्यादा अभ्यास की क्या जरूरत है ? ये बैसाखी के सत्संगों का सिलसिला है। मुमकिन है कि ये मेरी अन्तिम बैसाखी हो मैं नहीं कह सकता मगर मैं जानता जरूर हूँ क्योंकि मैं ने अपना काम कर दिया। मेरे जिम्मे जो

ड्यूटी थी, दाता ने कहा था तालीम बदल जाना और मैं ने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा वो मैं ने पूरा कर दिया।

राधास्वामी।

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक ११-४-१९८०

बुद्धि जब तुम को मिली, मिल जुल के रहना सीख लो।
द्वेष तज कर प्रेम की युक्ति का गहना सीख लो ।।
भाईयों से वैर त्यागो, मित्रता का भाव लो।
मुख से मीठे और मधुर, वचनों का कहना सीख लो।
लड़ते लड़ते हो गये हो, अब निबल सोचो भी कुछ।
यह दशा अच्छी नहीं, सुमती का लहना सीख लो ।।
एसा हो व्यवहार जिस से, सुख मिले और शान्ति।
कौन कहता है कि दुःख सागर में बहना सीख लो ।।
राधास्वामी जग में आये, प्रेम का परिचय दिया।
मेल का साधन हो, मिलजुल कर निबहना सीख लो ।।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

राधास्वामी ।

अब लोग बैसाखी के सत्संग पर आये हैं। मैं ने पिछले दो सत्संग केवल परमार्थ पर दिये हैं। बहुत ऊँचे सत्संग थे और जो कुछ भी मैं ने कहा वो मेरे ज़ाती अनुभव के आधार पर था। आज दाता दयाल का ये शब्द पढ़ा गया। जब दुनिया के हालात को देखता हूँ तो मुश्किल मालूम होता है कि जो कुछ संतों ने लिखा हुआ है लोग उस को पूरा कर दिखाएँ।

धर्म के नाम पर देख लो क्या हो रहा है। ये हाल है कि राधास्वामी मत या सुरत शब्द के आमिल भी गद्दिया वाले दो गुरु भाई आपस में मिल जुल कर बैठ नहीं सकते। वैसे तो वे राधास्वामी मत की या संत मत की शिक्षा देते हैं मगर किसी एक प्लेट फार्म पर आ कर इक्ट्ठे बैठ नहीं सकते पुलिटिकल लाईन को देखो वहां नफरत है। प्रत्येक आदमी अपनी ही पार्टी चलाना चाहता है और मुख्य मन्त्री बनने लिये दौड़ता है। घरों में देखो पति पत्नी की नहीं बनती, बाप बेटे को नहीं बनती, सास बहु की नहीं बनती। दुनियां क्या है ? मेरी तो बुद्धि चक्कर खा गई। मैं तो अब सोचता हूं

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कि यदि मैं हिन्दुस्तान में पैदा न होता और फिर किसी मजहबी दुनिया में न आता तो बहुत अच्छा था। यहां मजहबों में नफरत, संतों के डेरों में दल बंदियां और मैं भी खाली नहीं। यदि तुम कहो कि मेरा मन्दिर खाली है यहां भी दल बन्दो है मगर वह दल बन्दी मेरी वजह से प्रकट नहीं होती। मगर अन्दर ही अन्दर आग सुलगती रहती है। मैं सोचता हूं संतों की ये तालीम कैसे ठीक सिद्ध हो सकती है और कौन इस पर अमल कर सकता है। ये वो कर सकता है जिस को सत्संग मिला हुआ है। जब तक कोई संत मत की असली तालीम से अनभिज्ञ है और स्वयं इस तरफ आना नहीं चाहता ये संतों की तालीम उस के लिये नहीं। इन्सान यदि सोचे, सत्संग में विचार करे तब वो अपने आप को बचा सकता है। दुनिया को बचाना तो बड़ा मुश्किल है। दुनियां कैसे बचेगी ? जब तबाही हो जायेगी फिर दुनियां को होश आयेगी कि हम क्या करें।

अब मैं स्वयं सोचता हूँ कि हम प्रेम क्यों करें ? मैं प्रमाण दे कर इस सवाल को समझाने की

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कोशिश करता हूं सोचने की बात है। सोचो तो सब कुछ है ना सोचो तो कुछ भी नहीं। ये सत्संग है सच्चाई की बात कहता हूँ। तुम सुनो या न सुनो। देखो ! रात को तुम सो जाते हो तुम को स्वप्न आता है। स्वप्न में तुम को क्रोध आता है, किसी को मुक्का मारते हो तुम्हारा हाथ हिल जाता है, कोई भंयकर दृष्य देखते हो डर जाते हो, बड़बड़ाते हो तुम्हारी जबान हिलती है, औरतों का तो मुझे पता नहीं तुम मर्द हो अपने विचार से ख्याली औरत स्वप्न में बना लेते हो तुम्हारा वीर्य पात हो जाता है। जब कि वह स्वप्न का विचार तुम्हारे बस में नहीं है। यदि तुम चाहो कि अपनी इच्छा के अनुसार स्वप्न देखलो तो तुम नहीं देख सकते और न ही जो बिचार तुम्हारे स्वप्न में पैदा होता है उस में तुम्हारी नीयत भी शामिल होती है। तो इस से क्या सिद्ध हुआ कि स्वप्न के विचार जिस पर तुम्हारा काबू नहीं है उस का असर तुम्हारे शरीर पर पड़ता है तो जाग्रत में जो कुछ हम अपनी इच्छा या नीयत से सोचते व करते हैं इस जिन्दगी

में अपने अन्तर किसी से वैर किसी से द्वेष, किसी से दुश्मनी, किसी से ज़ाती गर्ज़ के लिये हेरा फेरी, किसी की बुराई निन्दा करेगा अन्दर में और बाहर में और उस की प्रतिक्रिया (Reaction) उस का प्रभाव हमारे शरीर पर क्यों नहीं जायेगा ? ज़रूर जायेगा। बच नहीं सकते। जैसा करोगे वैसा भरोगे। जब स्वप्न का असर तुम्हारे शरीर पर पड़ता है तो जाग्रत में जो कुछ हम और तुम सोचते रहते हैं क्या इस का असर हमारे शरीर व हमारी जिन्दगी पर नहीं पड़ेगा तुम इस को मामूली चीज़ समझते हो। कोई क्या कुछ नहीं करता, इसका परिणाम क्या होगा ? इसका परिणाम वही होगा जो हो रहा है। अब देखो क्या हो रहा है और आगे जो दुनिया में होगा देख लेना।

आप बैसाखी पर आये हैं। मैंने जो कुछ जीवन में समझा वो ब्यान करता हूँ और सब को Challenge करता हूँ कि यदि मैं ग़लत कहता हूँ तो प्रमाण दो। मैं तो तुम को वो प्रमाण देता हूँ जो किसी मज़हब का नहीं। ये न हिन्दू

के लिये है न मुसलमान के लिये है न सिख के लिये है। तो हम क्यों प्रेम करें? जो कुछ तुम सोचोगे उस का फल तुम पर आयेगा! आयेगा!! आयेगा!!! ज़रूर आयेगा। वही तुम को मिलेगा। कोई गुरु, कोई महात्मा, कोई ईश्वर, कोई परमेश्वर, कोई राम, कोई कृष्ण, कोई राधास्वामी तुम्हारे इस कर्म के फल से नहीं बचा सकता, कोई गुरु मदद नहीं कर सकता। गुरु ने तो केवल ज्ञान और समझा देना है। गुरु वाक्यं मूल मंत्रम्। यदि गुरु बचा सकते होते तो अपने आप को बचा सकते ये आप बीमार न होते।

बुद्धि जब तुम को मिली मिल जुल कर रहना सीख लो।
द्वेष तज कर प्रेम की, युक्ति का गहना सीख लो।

मैं केवल ये आप को ही नहीं कहता हूं मैं देश के राजनैतिक नेताओं को कहता हूँ। इन गुरुओं महात्माओं और उन के चेलों को कहता हूँ और आप दुनियांदारों बल्कि सारी दुनिया को कहता हूँ कि मैं किसी को मज़हब में फंसाना नहीं चाहता न मैं लोगों को राधास्वामी मत या

संत मत में फंसाता हूँ मैं मानवता में फंसाता हूं। मानवता का क्या अर्थ है।

गुरु पशु त्रिया पशु वेद पशु, नर पशु संसार।
मानुष ताहि जानिये, जाहि में विवेक विचार।

तो विवेक विचार मैं ने आप को दे दिया। राधास्वामी दयाल की बाणी में साफ लिखा हुआ है कि राधास्वामी दयाल प्रेम के सागर हैं, कहीं बूंद रूप हैं, कही लहर रूप हैं, कहीं दरया रूप हैं और कहीं समुद्र रूप हैं। बूँद रूप तो हमारा घर है जहां चार छे: जीव रहते हैं। इन में आपस में प्रेम होना चाहिए। एक आदमी बाबा फकीर या अपने गुरु से प्रेम करता है मगर औरत से उस की नफरत है जब कि गुरु से प्रेम रूप है। पति पत्नी यदि परस्पर घृणा रखते हैं तो यदि वह ये कहें कि वे संत मत के अनुयाई हैं तो वे बेवकूफ हैं, बकते हैं, झूठ बोलते हैं। एक तो वे अपने आप को धोखा देते हैं दूसरे दुनियां को धोखा देते हैं। चार बातें बना कर गुरु बन के लोगों को उपदेश देना एक और बात है। यही दाता दयाल कहते हैं।

भाईयों से बैर त्यागो, मित्रता का भाव लो।
मुख से मीठे और मधुर वचनों का कहना सीख लो।

सत्संग से बात को सुनो, समझो और उसके ऊपर अमल करो ताकि जीवन सुखी बने। घरों में गैरियत न हो। मैं तुम को अपने घर की बात बताता हूँ। मेरी बहु अर्थात मेरे लड़के की पत्नी आई और मेरी औरत बीमार रहती थी। घर में मैंने लड़की को और बहु को बुलाया, मैं ने कहा ये मेरा संदूक है इस में पैसे व हिसाब किताब रहता है और चाबी है। तुम ननद भरजाई हो जिस समय तुम को जरूरत हो इस में से निकाल लिया करो, चाबी सम्भाल लो। लड़की ने ये बात मेरी औरत को बता दी। जब मैं आया तो मेरी औरत कहती है आप ने अच्छा नहीं किया। क्यों नहीं किया ? क्या किया मैं ने ? उस ने कहा कि घर का पर्दा बाहर नहीं निकालना चाहिये, बहु को नहीं बताना चाहिये। मैं ने कहा तू यह समझती है कि बहु जोर है ये बेगानी है, गैर है लड़की ने तो कल को अपने घर चले जाना है, घर तो बहु का है। तुम्हारे

घरों में यही दुःख का कारण है कि लड़कियों को सब से अच्छा समझते हैं बहुओं को गैर समझते हैं और फिर तुम में गैरीयत आ गई तो परिणाम यह हुआ कि तुम में प्रेम नहीं रहा। तुम ने समझ लिया कि मेरी बहु है मगर पर्दा रखा। मैं तुम को अपने घर की मिसाल दे कर समझाता हूँ। तभी तो बहुओं और सासों की नहीं बनती। सास ये समझती है कि ये और है। घर की मालिक तो बहु है, लड़की नहीं है, मगर आज कल की जो माताएं हैं ये लड़कियों को बहुओं से ज़्यादा अच्छी समझती हैं। ज़्यादा प्यार करती हैं। फिर इस का परिणाम अखबारों में पढ़ो। क्या कुछ हो रहा है दुनियां में ? हमारे दुःखों का कारण केवल ये हैं हम को सत्संग नहीं मिला। सत्संग से मिलता क्या है ?

बिन सत्संग बिवेक न होई,
राम कृपा बिन सुलभ न सोई।

मेरे पास चिट्ठयां आती हैं। सास की बहु के साथ नहीं बनती, बहु की सास के साथ नहीं बनती यही दुनियां में झगड़े हैं और दुःख हैं। संत मत की तालीम लोक और परलोक दोनों को बनाती है।

यही बात राधास्वामी मत की प्रार्थना में है।

लोक अलोक पाऊं सुख धामा,
चरण शरण दीजे विश्रामा।

पिछले दो सत्संगों में मैं ने परलोक की बातें कही, आज मैं आप को लोक की बातें बता रहा हूं ये दु:खड़े हैं हमारे। इन के Root Cause को कोई नहीं पकड़ता। केवल नाम, नाम, नाम, नाम अलापते हैं। गृहस्थियों को गृहस्थि का जीवन काटना मुश्किल है। राम २ कहना आसान है। गृहस्थियों के लिये इस तालीम की जरूरत है। जिस के घर में कलह रहती है उसे सुख कहां,

लड़ते लड़ते हो गये,
हो अब निबल सोचो भी कुछ।
यह दशा अच्छी नहीं,
सुमती का लहना सीख लो।
ऐसा हो व्यवहार जिससे,
सुख मिले और शान्ति।
कौन कहता है कि,
दु:ख सागर में रहना सीख लो!

सत्गुरु कौन है? जो इन्सान को महनत और

मुशक्कत से बचावे और उसे तकलीफ करने की जरूरत न हो। असली चीज़ तो ये है कि इन्सान की जिन्दगी में उस को चिन्ता फिकर और ग़म न व्यापे। चिन्ता फिकर और ग़म दुनियादारी में भी आ सकता है और जिन को मुक्ति की तलाश है उन को भी आ सकता है। इस वास्ते सत्संग की जरूरत है। जितनी महिमा है सत्संग की है। इसी वास्ते सब संत कहते हैं।

पूरा सत्गुरु खोज री तेरे भले की कहूं।

सत्गुरु पूरा ढूँढो। जहां भी जाओ सभी कहते हैं, हमारा गुरु पूरा है, हमारा गुरु कामिल है मगर वास्तव में गुरु नाम तो ज्ञान, समझ और विवेक का है और सत्गुरु नाम सच्ची समझ और सच्चे ज्ञान का है। जहां से भी किसी को मिलता है वहां से ले लो मगर ये देता कौन है ? ये आज कल के गुरु अपने पैरोकारों को सच्चाई और जीने का राज़ बताएं तो शायद बहुत-कुछ लाभ हो सके क्योंकि तुम को हम को जो कुछ मिलना है अपने ही विचार का फल मिलना है और कुछ नहीं। ये हमारा

कर्म बन जाता है ।

राधास्वामी जग में आये प्रेम का परिचय दिया,
मेल का साधन हो मिल जुल कर निभाना सीख लो ।

ये राधास्वामी या संत मत प्रेम का मार्ग है । संत केवल कलयुग में पैदा होते हैं ताकि जो दुःखी जीव आते हैं उन को सच्चा रास्ता बता दिया जाये । बस यही बाहर के गुरु का काम है । घरों में आपस में प्रेम रखो, प्रेम से रहो । प्रेम व शान्ति का जीवन व्यतीत करो । बस । जिसका लोक ही ठीक नहीं उसका परलोक कहां से ठीक होगा ।

सब को राधास्वामी ।

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक १२-४-१९८०

मैं ने तीन सत्संग बैसाखी पर दिये आज ये चौथा है। लोक और परलोक को ठीक करने के लिये गुरु की ज़रूरत है। गुरु का अर्थ है ज्ञान समझ विवेक और हकीकत की जानकरी । दुनिया ने ये समझा हुआ है कि जाके नाम ले आओ तो तुम गुरु परायण हो गये, ये बात नहीं है। गुरु नाम ही है जो अन्धेरे को दूर करे अर्थात मन के अज्ञान और भ्रम को दूर करे और वो तब दूर होगा जब इन्सान को सत्संग मिलेगा। शर्त ये है कि कोई सत्संग कराने वाला हो जो आप इस राज़ को जानता हो। उस की अपनी ज़ाती गरज़ न हो या अपने मान

इज्जत या डेरे के लिये ही काम न करता हो।
राधास्वामी दयाल की बाणी है—

चेत मेरे प्यारे तेरे भले की कहूँ,
गुरु तो पूरा ढूंढ तेरे भले की कहूँ।

पहली बात तो ये कहते हैं कि तुम्हारा गुरु पूरा होना चाहिये जिस को तमाम वस्तुओं की जानकारी हो और जो इन्सान को उस की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक हालत को बराबर अर्थात सम रखने की तजवीज़ और तदबीर बता सके। ये जो नाम दुनिया लेती है ये अन्तिम लक्ष नहीं है। नाम के जपने से क्या होता है कि आदमी के मन में ताकत आ जाती है। और वो अपना शारीरिक, मानसिक और अपनी आत्मिक अवस्था को बराबर रख सकता है। जो केवल अभ्यास में शब्द सुनने के पीछे ही लगे रहते हैं उन को कुछ नहीं मिलता यानि अन्तिम लक्ष उन को नहीं मिलता। शब्द के सुनने के बाद अगर पूरा गुरु कोई मिला हुआ है तो अनुभव आता है। फिर उस को शब्द सुनने की भी कोई

ज़रूरत नहीं यही राधास्वामी दयाल कह गये।

सुरत शब्द दोऊं अनुभव रूपा,
तू तो पड़ा भरम के कूपा।

स्वामी जी कहते हैं सुरत शब्द तो अनुभव है। तू तो भ्रम में आ कर शब्द अभ्यास करता है। इस वास्ते वो कहते हैं कि, चेतो! अगर लोक परलोक चाहते हो तो ये बातें अमल में लाओ।

चेत मेरे प्यारे तेरे भले की कहूँ,
गुरु तो पूरा ढूंढ तेरे भले की कहूँ।

अब दुनिया सोचे। यहां लाखों गुरु बने हुये हैं जिस को देखो वो गुरु है। क्या इन को हकीकत का या असलीयत का पता है या बताते हैं? नहीं। सब के लिये एक मार्ग नहीं। बाबा सावन सिंह जी पूरे सतगुरु थे। कई आदमी मुझे ऐसे मिले जिन के Balance of Mind ज़्यादा अभ्यास करने की वजह से ठीक नहीं रहे। वो उन के पास गये। बाबा जी ने कहा, काको या भाई! तू अभ्यास न किया कर। तेरा अभ्यास मैं करूंगा। पिछले सन्तों ने राज़ को नहीं खोला। वे खोलते भी कैसे।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

लोग तो किसी आशा, लालच या किसी गर्ज़ के पीछे गुरुओं के पीछे जाते हैं। परमार्थ के लिये या आवागवन मिटाने के लिये कौन जाता है। ये बताओ मुझे। अगर किसी को आवागवन से छूटने का ख्याल हो तो वो आदमी अपने चाल चलन का ख्याल रखे। यहां कौन ठीक रखता है। फिर गुरु की बात को तब समझ सकेगा जब ये शर्तें पूरी होंगी।

शब्द रत्ता गुरु देख तेरे भले की कहूं।
तिस गुरु सेवा धार तेरे भले की कहूं।

स्वामी जी ने साफ कहा है कि गुरु पूरा ढूंढो, जो शब्द स्नेही हो क्योंकि शब्द को सुनने वाला आदमी मन के तमाम विचारों का ज्ञान रखता है कि मन के बिचार क्या होते हैं।

गुरु चरनामृत पी, तेरे भले की कहूं।
गुरु शीत प्रशादी खाओ, तेरे भले की कहूं।

जहां दुनिया में ये बातें अधिकार और संस्कार के अनुसार ठीक हैं वहां ये भी सच है कि एक

आमल जैसा भी हो उस का असर दूसरे पर पड़ता है, मैं तुम को एक सच्ची घटना सुनाता हूँ। जर्मनी का एक प्रोफेसर था जो बडा नेक और भला मनुष्य था, किसी दुर्घटना में दो ऊंगलिया खराब हो गईं । डाक्टरों ने उन ऊंगलियों को निकाल कर उन की जगह दो ऊंगलियां एक मुर्दे की लगा दीं प्रोफेसर राज़ी हो गया मगर उस को यह आदत पड़ गई कि किसी आदमी की जेब से कोई न कोई चीज़ चुरा लेता और थोड़ी देर के बाद उसे बता देता कि मैं ने तेरी जेब से ये चीज़ चुराई है और उसी को वापिस कर देता। लोगों को ये शरारत समझ में न आई वे हैरान थे कि उस के दिमाग़ को क्या हो गया? डाक्टरों तक यह बात पहुँची कि उस की जो दो ऊँगलियां लगाई गईं थी वो एक जेब कतरे की थी जो मर गया था। इससे साबत हुआ कि एक इन्सान का असर दूसरे पर जाता है। तुम जिस की संगत करोगे उस का असर तुम पर आयेगा। यदि मेरी संगत का असर तुम पर पड़ता है तो क्या तुम्हारी संगत का असर मुझ पर न होगा। मगर इस का राज़ मेरे पास ये है कि मैं तुम में से किसी के

साथ प्यार नहीं करता। बिल्कुल सच्ची बात है। तुम्हारे ही विचारों के अनुसार तुम को जवाब देता हूँ। जितना प्रेम कोई करता है उतना ही प्रेम उस को दे देता हूँ फंसता नहीं। उस के प्रेम में अगर मुझ को ज़ाती ग़र्ज़ हो तो मैं फंस जाऊंगा। ये जो संतों का मार्ग है इस में सत्संग है वो भी किसी कामिल नि:स्वार्थ गुरु का हो। उस का न हो जो अपना मन्दिर या डेरा बनाना चाहता है या अपना नाम रखना चाहता है। मैं भी गुरु बनने के सौ प्रतिशत काबल नहीं, एक या दो प्रतिशत मुझ में भी कमी है। मैं आप इस कमी को महसूस करता हूँ। कोशिश करता हूं मगर कर्म का चक्कर मुझे भी कभी २ मार देता है।

जो कुछ प्रत्येक इन्सान के अन्तर होता है, जैसा वो होता है वैसी रैडीएशन निकलती है। तुम सोचते हो, तुम दिल में कुढ़ते रहते हो, दूसरों का बुरा सोचते रहते हो तो क्या तुम्हारे असर से दूसरे बच जाएगे? औरतें रोटी पकाती हैं, कुढ़ती हैं, जलती हैं, क्रोधित होती हैं, घर वाले वो रोटी

खाएंगे वे बीमार होंगे बच नहीं सकते। ये विचार शक्ति है, रेडीएशन काम करती है। इसी लिये हमारे यहां पहले ब्राह्मण लोग कोई विधवा औरत हो उसके हाथ की रोटी नहीं खाते थे। मां अगर विधवा है तो उसके हाथ की खा लेंगे मगर और किसी विधवा के हाथ की रोटी नहीं खाएंगे आप पका कर खालेंगे। ये छुआ छूत की प्रथा अब तो उसकी शक्ल बदल गई। जिस नियम के अनुसार ऋषियों ने बनायी थी वो केवल रुहानी थी ताकि दूसरे का असर न पड़े। पहले न ब्राह्मण थे न क्षत्री थे न वैश्य थे न शूद्र थे। जब आर्य लोग बाहर से आये तो यहां उनको इन्तजाम करना पड़ा। उस समय कई आदमियों ने अपने आप को ब्राह्मण के काम के लिये प्रस्तुत किया कि इस प्रकार कार्य करके सहायता करेंगे। कई ने कहा कि हम खेती बाड़ी और रक्षा का काम करके सहायता करेंगे वे क्षत्री बन गये, कईयों ने कहा वे व्यापार का काम करेंगे वे वैश्य बन गये और सब से जो अच्छे आदमी थे उन्होंने कहा हम सेवा करेंगे। उन सेवा करने वालों को हम शूद्र समझ कर उन से घृणा

करते हैं। ये हमारी ग़लती है। अब शूद्र वो नहीं जो चमार के घर पैदा हुआ है बल्कि वो है जो नियम बद्ध न हो। जो ब्राह्मण के घर पैदा हुआ और नियम के पालन करने वाला नहीं है वो शूद्र से भी नीच है। और जो एक शूद्र के घर में पैदा हुआ बशर्तेकि वह नियम बद्ध हो वो ब्राह्मण से भी बढ़ कर है। ये बात सच्ची कहता हूं। इस में वही नियम काम करता है। अब आज कल देखो, जिस के पिता ने लड़ाई न देखी हो तुम उसको सिपाही भरती करा लो तो तुम आशा करोगे की वह लड़ाई लड़ेगा तुम आशा नहीं कर सकते कि वह लड़ेगा। उन का जो काम है वे वो करेंगे। उन का वो काम सिपाईयों से हज़ार दर्जे अच्छा है। इस लिये स्वामी जो कहते हैं कि—

पूरा गुरु ढूंढ तेरे भले की कहूं।

किसी पूरे गुरु को ढूँढो जो तुम को सच्ची बात बता दे कि तुम ने इस तरह नहीं इस तरह करना है।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

गुरु आरत कर ले तेरे भले की कहूं।
तन मन भेंट चढ़ाओ तेरे भले की कहूं।

मैं राधास्वामियों के साथ भी सहमत नहीं। गुरु को कौन तन मन दे सकता है! मेरे पास तो सारे मांगने के लिये आते हैं देने वाला कोई नहीं आता है। अगर यूं नहीं मांगते तो यूं मांगते हैं कि हम को ये मिल जाये हमें ये मिल जाये, हमें ये मिल जाये। तन मन के चढ़ाने का अर्थ ये है कि जब तुम अभ्यास करने लगते हो तो उस समय न तन की सुध रहे, न मन का ख्याल रहे, न धन का ख्याल रहे। तब तुम अभ्यास में कामयाब होंगे। अगर हम लोग जब अभ्यास करते हैं तो दुनिया के जितने कारखाने हैं, जितने ख्याल हैं, सब हमारे सामने याद आ जाते हैं। तुम सोचो मेरी बात को क्या मैं गलत कहता हूं? भिन्न २ बिचार वाले आते हैं। ऐसी रोचक बातें बना २ कर हम को इन गुरुओं ने लूटा है कि तन भी दे दो, मन भी दे दो, धन भी दे दो। मैं आप को एक घटना

बताता हूं। मैं गया धाम में वहां गोपी गंज के आदमिओं ने मुझे कहा कि एक नौ जवान साधु यहाँ आया। उस ने कहा कि गुरु को तन मन दे दो मैं सत् लोक पहुंचा दूंगा। कई रोज ऐसा कहता रहा। एक भोली भाली औरत थी उस के पास जितना ज़ेवर था, कुछ रुपये थे सब कुछ उस के सामने रख दिया और कहा मुझे सत् लोक पहुंचा दो। उसने कहा कि तेरा तन मेरा हुआ, जी हाँ- आप का है। उसने कहा सब कुछ मेरा है, उसने उसके साथ भोग किया। बाहर निकल के उसने लोगों से कहा तो वह भाग गया। मैं औरतों को कहना चहता हूं कि अक्ल की बात करो, गुरुओं के पीछे गलत तरीके से फिरती हो किसी महात्मा के पांव को हाथ मत लगाओ। जब तक तुम को उस का पूरा विश्वास न हो। मेरी औरत थी उसने कभी दाता दयाल के पांव को हाथ नहीं लगाया। बिल्कुल नहीं। जब कि मेरा इतना प्रेम था। उसने कभी भी पांव को हाथ लगा के मत्था नहीं टेका। बस आती दूर से मत्था टेक

देती और दाता दयाल तो क्या किसी जगह किसी साधु महात्मा को भी मत्था नहीं टेका, किसी के पैरों को हाथ नहीं लगाया। इसी नियम पर हमारे यहां पिछले ज़माने में औरतें केवल अपने पति के बिस्तरे के सिवाय किसी और के बिस्तर पर नहीं सोती थी। ये असलीयत को जानने की पहली ज़रूरी शर्तें हैं।

बचन गुरू के मान तेरे भले की कहूं।
गुरू कर प्रसन्न तेरे भले की कहूं।
निज भजन कर तेरे भले की कहूं,
जीव दया तू पाल तेरे भले की कहूं।

औरतें बैठी हुई हैं तुम अपने छोटे बचों को तीन चार साल के होते हैं, बच्चा कोई ग़लती कर जाता है तो तुम उसको मारती हो, मारती हो कि नहीं मारती। जब तुम मारती हो तुम बुरा करती हो क्योंकि बच्चे को तो पता नहीं कि मैं ठीक करता हूं या ग़लत करता हूँ या ये अच्छा है या बुरा है, उस का क्या दोष। याद रखो! इन बच्चों की आह तुम को खा जायेगी। तुम्हारा

दोष है और उस की सज़ा तुम भुगतोगी । मेरे साथ बीती हुई है । मेरा छोटा भाई था वज़ीर चन्द । जब मां ने रोटी पकाने लगना तो कहना इस को खेलाओ । कई बार उस के पीछे मुझे मार पड़ी । एक दिन मैं खेला रहा था, आगे धनुष पड़ी हुई थी जो मेरे बाप ने कव्वों को डराने के लिये रखी थी । मेरा पांव उस में फंस गया । निचे वज़ीर चन्द ऊपर मैं । मां चौके से उठी उस ने न एक देखी न दो, 5-7 थप्पड़ मुझे मार दिये और लड़का फिर मेरी गोद में दे दिया कि खेला इसको । बाहर बाली जगह अब तक मुझे याद आती है । मैं अफसोस करता हूँ । वहां आगे पीछे घास थी । बीच से रास्ता था । वहां खड़े हो कर मैंने कहा कि हे भगवन ! इस के पीछे मुझे मार पड़ी या इस को मार दे या मुझे मार दे । ये मैं ने प्रार्थना की । तीन महीने के अन्दर वह लड़का मर गया । याद रखो ! जीव दया पालने का अर्थ ये है कि तुम अपने घरों में बच्चों पर दया करो । दूसरे यदि दया करनी भी है तो बजाय इसके कि तुम बाबा फ़कीर या किसी का डेरा भरो, कोई

तुम्हारा रिस्तेदार दुखिया हैं, गरीब है, उस को क्यों नहीं देते ? अर्थात उन को दो । वो पहले अधिकारी हैं। बाप को तुम रोटी नहीं देते, सास के साथ तुम्हारी औरत की बनती नहीं है और गुरु महाराज आ गये उस के आगे रुपये रख दिये और मत्थे टेक दिये ये कहां की बुद्धिमता है यही बातें हैं जिन पर न अमल करने से करोड़हा व्यक्ति नाम लिये बैठे हैं। किसी को शान्ति नहीं। अब सोच लो तुम।

दुख न दे तू काहे, तेरे भले का कहूं।
वचन तान मत मार, तेरे भले की कहूं।

किसी को ताना मत मारो। जब जो इन नियमों का पालन नहीं करता वो लाख सत्संगी बन जाये लाख मत्थे टेकता रहे उस को शान्ति नहीं मिलेगा। हां, मेरी तरह बाते करने के लिये कई हो जाएंगे। मैंने जो अज़माया वो कहता हूँ।

कड़वा तूं मत बोल, तेरे भले की कहूं
सब को सुख पहुंचा, तेरे भले की कहूं।

ये है चेतावनी। अब सारी दुनियां को तो तुम सुख नहीं दे सकते। जिनको परमात्मा ने तुम्हारे साथ लगाया है उन को सुख दो। तुम्हारे मां बाप हैं उन की सेवा करो। वो अधिकार रखते हैं। ये है राधास्वामी मत या संतमत जो मैं ने समझा है।

नाम अमी रस पी, तेरे भले की कहूं,
शील क्षमा चित राख, तेरे भले की कहूं।

स्वामी जी ने कोई नई बात नहीं कही। सब महज़बों ने यही कहा। हमारा सारा हिन्दु धर्म यही बात कहता है।

संतोष विवेक विचार, तेरे भले का कहूं,
काम क्रोध को त्याग तेरे भले की कहूं।
लोभ मोह को मार, तेरे भले की कहूं,
दीन करीबी धार, तेरे भले की कहूं।

अब तुम देखो तुम में से बहुतों ने नाम लिया हुआ है। तुम्हारी 60, 60, 70, 70, साल की आयु

है तुम पोतों वाले हो गये अब भी काम भोगते हो तो फिर बाबा फकीर या किसी गुरु से आशा करते हो कि तुम को सत्लोक पहुंचा दे। कौन पहुँचायेगा ? ऐसी आशा रखना बिल्कुल ग़लत है। राधास्वामी मत की प्रार्थना में है "लोक अलोक पाऊं सुख धामा" वो तुम तभी कर सकते हो जब तुम पहले इन बातों पर अमल करोगे। नौ जवानों को तो ये नाम ज़हर है। उन के लिए केवल अच्छा आचरण बनाना है। मैं ने अपने लड़के को कभी नाम नहीं दिया आचरण सखाया। पहले इन्सानियत सीखो। अगर आज कल का गुरु मत सच्चई पर चलता, दुनिया को जीने का राज़ बताता तो बहुत लाभ हो जाता। अपने विचारों को शुद्ध रखो।

सन्तों की कर प्रीत, तेरे भले की कहूं,
भोजन बहुत न खा, तेरे भले की कहूं।

तुम रोटी ज्यादा खा लेते हो अधिक तर स्त्रियों में तो ज़बान का चसका बहुत होता है। खटाई आदि बहुत खाती हैं। देखो! मैं बिल्कुल खाने का परहेज़ रखता हूँ। सेहत यदि तुम्हारी

ठीक है तो तुम्हारा मन भी ठीक है, जब सेहत ठीक नहीं है तो ज्ञान ध्यान सब भूल जाता है। तब पता लगता है कि फकीर चन्द, तू क्या है जो भाषण करता फिरता हैं।

कहने का सारा मतलब ये है कि गुरु बन जाना और चीज़ है और रहनी में रहना और है। इस मन की निरख परख करनी भी एक और चीज़ है। जिस व्यक्ति का अभ्यास बन जाता है। अन्दर में अभ्यास व प्रकाश खुल जाता है उसकी बुद्धि तीव्र हो जाती है और वह बात को समझने के योग्य हो जाता। फिर वह अपने रूप में रहता है और मन पर राज करता है। तभी वह सच्चा महाराज भी कहलाता है। जो कुछ इस बाणी में लिखा हुआ है ये ही सब सनातन धर्म के नियम हैं। तुम यदि लोक परलोक को सुधारना चाहते हो तो सब से पहले किसी पूरे गुरु को ढूंढ़ो। तुम पूरा गुरु उसे समझते हो जिस का रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है। नादानों, ये झूठ है, मक्कारी हैं, अज्ञान में रख कर गुरु मत नें तुम को ठगा और लूटा है।

मुझे तो गुरु बनने की कोई ज़रूरत नहीं थी। मैं तो समझना चाहता था कि सन्त मत है क्या चीज़ क्योंकि इस ने सब मजहबों का खण्डन किया। पारासर, व्यास, राम, कृष्ण, देवी, देवता, मुसलमान, बुद्ध, जैन, ईसाई सब को कहा के काल और माया मत में हैं। और अब मैं अपनी ज़िन्दगी के तजुर्बे के अनुसार अनुभव को हासल कर के ये कहता हूं कि वर्तमान गुरु मत सिवाय खास 2 के सारे का सारा काल और माया मत है और इस वास्ते मैं दुनिया में अनामी धाम से अवतार लेकर आया हूं ये बताने के लिये कि सच्चाई ये है। अब तजुर्बा हो गया' बात समझ में आ गई कि गुरु भी, मालिक भी, जो कुछ भी है ऐ इन्सान! तुम्हारे अन्तर में रहता है। गुरु आदमी का नाम नहीं है, गुरु नाम है समझ का, विवेक का और ज्ञान का। गुरु शुद्ध तत्व विचार है ये तो तुम सुनते नहीं। केवल मत्था टेकने या रुपया देने के सिवाय तुम्हारा कुछ काम नहीं। अपने विचार को ठीक करो। ये जो दुनीया में दुखी हैं वो क्या हैं। ये अपना २ कर्म अपना ख्याल और विचार है,। जो किसी ने कुछ

किया हुआ है वही उन को फल मिलता है, भुक्त को भी मिलता है, सन्तों को भी मिलता है। उन के साथ भी यही बीती वे बुरी दशा से बीमार हो के मर गये। तुम अपने ख्यालात को शुद्ध रखो प्रेम से रहो। क्योंकि मन ठीक नहीं होता। मन चंचल है इस को सुमिरण, ध्यान और भजन दिया जाता है ताकि आदमी मन पर सवारी कर सके, सुमिरण, ध्यान और भजन का केवल मतलब यही है कि अपने दिल में विश्वास रखो। गुरु को अपने पास समझो वो तुम्हारे पास रहता है। होशियारपुर या किसी और जगह नहीं रहता। जो सच्चाई थी वो मैं ने आप को बता दी। पहला व्यक्ति मैं हूँ इस हिंदुस्तान के अन्तर जिस ने इस राज़ को खुले शब्दों में खोला है। वरना गुरु अज्ञानता में रख कर हम को लूटते हैं शब्द योग जो है ये अन्तिम ध्येय नहीं है। शब्द योग करने से अगर पूरा गुरु कोई मिला हुआ है तब उस का बेड़ा पार होता है। जब ज्ञान हो जाता है तो पीछे बाहर के गुरु का ऐसान रह जाता है, कबीर ने कहा है-

कामी तरे क्रोधी तरे पापी तरे अनन्त,
आन उपासक, कृतघन तरे न नाम रटन्त ।

वे कहते हैं सब की मुक्ति है मगर जो दूसरे को पूजता है और कृतघन है बेशुक्रा है बेशक वो नाम जपता रहे वो नहीं तर सकता। अब कृतघन के अर्थ कई समझ लो। तुम को मां बाप ने पैदा किया, पढ़ाया लिखाया अब तुम जवान हो के मां बाप के पीछे पड़के उन की बेइज्जती करते हो या उन से लड़ाई करते हो, तुम कृतघन हो। पति कमा के लाता है पत्नी को देता है पत्नी फिर भी शुक्र नहीं करती वो पति के साथ लड़ाई करती रहती है वो कृतघन है। जिस पंथ से जिस गुरु से तुम को ज्ञान मिला तुम उस का धन्यवाद नहीं करते तुम दोषी हो। मेरे पास जो चीज़ है वो शुभ भावना है। शेष सब तुम्हारे विश्वास का परिणाम है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि दाता! इन सब जीवों की रक्षा कर जो मेरे पास आते हैं।

सब को राधास्वामी।

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक १३-४-१९८० प्रात:

सब से पहले मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ ओ दीवाने फकीर ! तू ने क्या किया ? मेरे बस की बात नहीं, मेरे ग्रह ऐसे हैं और मैं किसी खास उद्देश्य के लिये दुनिया में भेजा गया हूँ वो उद्देश्य क्या है ? मैं आप को प्रमाण देता हूँ । यहां सरसों हेड़ी के सत्संगी आये हुये हैं । वे 20, 25 घर हैं और सब मुझ को मानते हैं । उन की केवल एक बहु है जो देवी की पूजा करती है । वो बीमार हो गई । डाक्टरों ने दवाई दी कोई फायदा नहीं हुआ । सच है या झूठ है इस का पाप या पुण्य

उन के सिर पर है वे यह कहते हैं कि मैं उस औरत के अन्तर प्रकट हुआ और उस को कहा क्या तू देवी को मानती है ? डाक्टरों की दवाईयें काम नहीं करेगी, ये ले 12 गोलियां, ये खा ले तू राज़ी हो जाऐगी। वो कहती है देवी की ज्योति जलाई हुई थी अर्थात दीपक बाबे ने तोड़ दिया और कहा देवी को छोड़ दे। दीपक प्रातः टूटा हुआ पाया और उस दिन से बहु ठीक हो गई। ये एक जीवित प्रमाण है। मेरे पास रोज़ पत्र आते हैं। मैं सच्चे हृदय से शपथपूर्वक इस संसार को कहता हूं कि मैं कहीं नहीं जाता। मुझे नहीं पता कि वह लड़की कौन है। ये सरसों हेड़ी वाले मुझे पूछते हैं कि आप तो कहते हैं कि मैं कहीं नहीं जाता मगर वो दीपक किसने तोड़ा ? अब मैं क्या जवाब दूं। एक जवाब देता हूँ कि उस के परिवार वाले अर्थात उस का ससुर और उस का पति आदि सब मुझे मानते हैं और मेरी पूजा करते हैं। उन की प्रबल इच्छा है कि मेरे ध्यान द्वारा उस लड़की की बीमारी चली जाये। उन की प्रबल इच्छा ने मेरे रूप को पैदा किया। क्योंकि उन की केवल एक ही बहु थी जो मुझे

छोड़ देवी को पूजती थी। इस लिये उन के विचार ने वो फकीर चन्द बनाया जिस ने कहा देवी को क्यों पूजती हो और दीपक तोड़ दिया। मैंने एक प्रमाण दिया है महीने में दस पन्द्रह ऐसी चिट्ठियां आती है जहां मेरा रूप प्रकट होता है। मैं अनामी धाम से इस फकीर चन्द के चोले में इसी वास्ते आया हूं कि दुनिया को बता जाऊँ कि सच्चाई क्या है। सच्चाई ये है कि ऐ इन्सान! जो कुछ है तेरे मन के अन्तर है। राम भी, गुरु भी, देवी भी, देवता भी जो कुछ तुम को मिलता है तुम्हारा विश्वास है। जिस का ख्याल प्रबल हो जाता है वो काम कर जाता है। आज कल ये नाम धारी सब नाम, नाम, नाम चिल्लाते हैं। जो गुरु केवल नाम ही बताता है और असलियत को छुपा कर के उससे धन दौलत लेता है, मत्थे टिकवाता है वो अच्छा नहीं करता। ये शब्द योग जो है ये मन, शरीर, आत्मा और सुरत को स्थिर करने के लिये हैं। जब तक किसी का मन या बुद्धि स्थिर नहीं है वो किसी बात को समझ नहीं सकता। आज कबीर साहिब का शब्द सुनाता हूं कि जो कुछ मैं ने समझा है वही

कबीर साहिब ने कहा है। इस समय तमाम दुनिया के नाम धारी लोग नाम के पीछे पड़े हुये है उन को ये पता नहीं कि नाम है क्या चीज़। राधास्वामी मत ने नाम का प्रचार किया औरों ने भी किया मगर कबीर साहिब लिख गये।

सुरत शब्द दोओो अनुभव रूपा।
तू तो पड़ा भरम के कूपा।

ये वो कह गये। जो व्यक्ति सारी आयु शब्द अभ्यास ही करता रहता है या केवल गुरु का ही ध्यान करता २ मर जाता हैं यदि उस को ज्ञान अर्थात् हकीकत व असलीयत का ज्ञान नहीं है तो उसके आवागवन के बचने की कोई सूरत नहीं। वो जरूर जन्म लेगा। लोग अपने २ गुरु का ध्यान करते हुये मर जाते हैं और लोगों को कहा जाता है कि अन्त समय गुरु आयेगा वो तुम को सत् लोक ले जायेगा। कैसे मानूं ? लोग मरते हैं मेरा रूप जाता है। कोई कहता है बाबा फकीर घोड़ा ले आया है या हवाई जहाज़ ले के आया है और मेरे बाप को पता नहीं होता कि कौन मर गया। ऋषि कहते हैं जब जब धर्म की हानी होती है तो

ब्रह्म अवतार लेता है। उस के एक हाथ में किताब होती है दूसर में तलवार होती है यानी वो प्रेम से भी कहता है और जो नहीं मानता तलवार भी चलाता है मगर सन्त का अवतार जब होता है वो तलवार नहीं रखता वो केवल बाणी कहता है। प्रेम से बात करता है। जो उस को समझ जाते हैं उन को लाभ हो जाता है। कबीर साहिब का शब्द है।

सन्तो सो सत् गुरु मोहे भावे, जो आवागवन मिटावे।
डोलत डिगे न बोलत विसरे, अस उपदेश दृढ़ावे।
बिन भरम हठ क्रिया से न्यारा, सहज समाध लगावे।

कबीर साहिब कहते हैं कि वो सत्गुरु वो हैं जो जीव को न तो कानों में ऊगालियां डलवाता है न आंखें बन्द कराता है, न प्राणायाम कराता है, उस को कबीर साहिब सत् गुरु कहते हैं।

द्वार न रोके, गगन ना रोके
न अनहद उरझावे

वो कहते हैं जो अनहद अर्थात शब्द सुनते हैं उन में भी वो नहीं फंसाता। अनहद शब्द इस वास्ते सुनना जरूरी है कि तुम्हारा कारण रूप स्थिर हो जाये उस के बाद किसी पूरे गुरु की तलाश करनी पड़ती है। बार बार हर एक पन्थ में कहा जाता है कि पूरा गुरु, पूरा गुरु, पूरा गुरु, ढूंढो। आज कल क्या

हो रहा है यदि कोई गुरु मर जाता है तो धन के लोभ में उस के लड़के या दूसरे रिश्तेदार गुरु बनने की इच्छा करते हैं। यही हाल दाता दयाल के दरबार का था। उन के रिश्तेदार अब वहां झगड़ा डालते हैं। वो कहते हैं हम गुरु हैं हम मालिक हैं। किस वास्ते ? पैसा इज्जत, मान। जब राधास्वामी दयाल गुजर गये जो पत्र व्यवहार राधस्वामी दयाल और राय साहिब सालिग राम में हुआ वो सारा जला दिया गया। क्यों कि यदि वे जनता में बाहर आ जाता तो दूसरों को कौन पूछता। ये दुनिया अन्धेर है। इस लिये कुदरत ने मेरे दिमाग़ को हिलाया है कि मैं संसार को सच्चाई बता जाऊँ, मगर मैं ये दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही सच्चाई है। जो कुछ मेरी समझ में आया है मैं वो कहता हूं।

शब्द योग अमली जिन्दगी के अनुभव को प्राप्त करने के लिये ज़रूरी है। बातों से तो मैं बता देता हूं मगर किसी को विश्वास नहीं आयेगा जब तक तुम स्वयं अमल करके अपने अन्तर

देख न लो । तुम डाक्टर के पास दवाई लेने जाते हो वो अनुपान बताता है अर्थात परहेज़ बताता है। अगर परहेज़ नहीं है तो कुछ फायदा नहीं। इसी तरह अभ्यास के साथ जरूरी अनुपान क्या है वो मैं बता देता हूँ। जैसे कि मैंने परसों के सत्संग में कहा था कि स्वप्न का विचार जिस में तुम्हारी इच्छा भी नहीं होती तुम्हारे शरीर पर असर पड़ता है और असर रखता हैं तो जागते हुये जो कुछ तुम करते हो। हम क्या करते हैं? इन्सान की ज़िन्दगी का कोई विभाग ले लो। राजनैतिक, घरेलु, खानदानी, पंथक या मज़हबी किसी की भी जिन्दगी देख लो, हर जगह किसी के साथ झगड़ा नफरत, द्वेष, ईर्षा आदि है। तो क्या इस का असर तुम्हारे पर नहीं पड़ेगा? इसी वास्ते जब तक किसी का चाल चलन ठीक नहीं है अथवा विचार ठीक नहीं है वो नाम जपेगा तो उस को हानी पहुंचेगी। मैं दुनिया को नाम नहीं देता बल्कि जैसा २ आदमी मेरे पास आता है उस के अनुसार बात बता देता हूँ। जो कुछ है तुम्हारे विचार में है। मेरे ख्याल में मैं ने स्पष्ट वर्णन करने में कोई कमी नहीं रखी आप को तरीका बता दिया। इसी में वेद मार्ग

है "शिव संकल्पं-अस्तु" हमेशा अच्छा विचार रखो घरों में अशान्ति नहीं रहनी चाहिये। तुम गुरु के प्रेमी बनते हो, तुम्हारी औरत से नहीं बनती, लडके बाप को नहीं बनती, पत्नी पति को नहीं बनती तो जब प्रम तुम्हारे दिल में नहीं तो तुम लाख फकीर चन्द या किसी को गुरु बना लो, वेदान्त व उपनिष्दों को पढ़ लो फिर तुम कैसे आशा कर सकते हो कि तुम्हारा जीवन स्तर ऊंचा चला जायेगा कि जहां तुम वापिस दुनिया में न आओ। इसी वास्ते संस्कृत का एक मन्त्र है जिस का अर्थ है कि एक तरफ ध्यान करो, कदम मिला के चलो इस का यह भी अर्थ है कि तुम्हारे परिवार में प्रेम चाहिये। मेरे यहाँ देखो सब गुरु भाईयों का मेल है और सब इकट्ठे बैठते हैं मगर और जगह ये नहीं है। मैं क्या कहना चाहता हूं कि कोई फकीर चन्द, कोई राम, कोई कृष्ण, कोई देवी, कोई देवता तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता। जो कुछ कर सकता है तुम्हारा अपना विश्वास अपनी श्रद्धा, अपना यकीन और अपना विचार करता है। अपने विचार को ठीक रखो अपने

घरों में शान्ति रखो।

नौजवानों को मैं कहता हूँ, दोस्तों! अपने ब्रह्मचर्य को पालो और ठीक रखो। कल मेरे पास एक औरत अपने लड़के को लेकर आई और शिकायत करने लगी कि भाग जाता है, ये होता है वो होता है। मैंने लड़के की शक्ल देखी और कहा माई! ये तेरे कहे में नहीं रहेगा। वो कहने लगी क्यों? मैं ने कहा इस नवयुवक ने अपना ब्रह्मचर्य छोटी आयु में खोया है। इस का दिमाग सन्तुलन में नहीं है। और आज कल एक नया फिर्का निकला है। वह कहता है कि जितना भोग करोगे उतनी समाधि लगेगी। ये बिल्कुल गलत तालीम है। ये दुनिया में क्या हो रहा है कि कोई विभाग ऐसा नहीं जहां चार सौ बीस न हो। मैं आशा करता था कि संत सच्चे होंगे। अब मुझे मालूम हुआ कि जितनी हेरा फेरी, जितना धोखा, जितना फरेब हम गुरुओं ने और महात्माओं ने किया है शायद किसी ने भी नहीं किया है। लोग कहते हैं जितने महात्मा हैं ये सत्लोक गये। मैं कहता हूं बिल्कुल नहीं। जिन्होंने हम लोगों को सच्चाई न बयान कर के अज्ञान में रख कर धोखा दे के अपनी सम्पत्तियें

बनाई अपनी मोटरें और ठण्डे कमरे बनाये हैं अब न जाने वे कहाँ होंगे। अब जो विचार घरेलू, सामाजिक, राजनीति में हैं, विचार की ताकत जो मैं ने समझी है उस नियम के अनुसार मैं ये भविष्य वाणी किये जाता हूं कि मानव जाती नष्ट हो जायेगी कोई अजब नहीं कि एक तिहाई लड़ाई में खत्म हो जाये या किसी और वजह से खत्म हो। क्योंकि कर्म का फल हर व्यक्ति को भोगना पड़ता है। कर्म है क्या ? तुम्हारा विचार। तुम सोचो क्या तुम दूसरे भाईयों से दुश्मनी नहीं रखते ? क्या तुम्हारी औरतों से दुश्मनी नहीं है, क्या तुम्हारी रिश्तेदारों के साथ दुश्मनी नहीं है ? कई कहते हैं कि ये प्रारब्ध कर्म हैं। तो प्रारब्ध कर्म तुमने ही किये हुये हैं चाहे इस जन्म के चाहे पिछले जन्म के, तो इस लिये मेरी समझ में तो यह आया है कि थोड़े दिन सत्संग कर के अभ्यास करके निज रूप का साक्षातकार करके दुनियां में रहा। दुनिया के सारे काम करो। भाई भाई रहें, बाप बाप रहे, बेटा बेटा रहे और सब कुछ करो मगर

दिल न दो, मैं आप लोगों को दिल नहीं देता। आप लोगों में किसी सत्संगी से या मन्दिर वालों से अपनी ज़ाती गर्ज़ के लिये प्रेम नहीं करता। क्यों नहीं करता? क्योंकि रेडीऐशन काम करती है। सुनो! प्रत्येक आदमी से रेडीऐशन निकलती है। तुम देखो! आज कल पुलिस के पास कुत्ते होते हैं। कातिल की वस्तु उसको सुंघा देते हैं। वो उस खुशबू के पीछे चलते हैं। इससे मालूम हुआ कि जिस प्रकार की खुशबू उसके कपड़ों में थी उस प्रकार की खुशबू जहां से वो गया सब जगह फैली हुई है। वो कुत्ता उसको सूंघता हुआ पकड़ता है। ऐसे ही हर व्यक्ति के अन्दर अच्छा हो या बुरा किरणें निकलती हैं। अगर आप को मेरे पास से रेडीऐशन मिलती है तो क्या आप की रेडीऐशन मुझ को नहीं आयेगी। मैं बच नही सकता। इस वास्ते ये बड़े महात्मा हो कर भी ऐसे गिरे कि जिसका नाम निशान नहीं रहा। संगत का प्रभाव होता है। मगर मैं ने ये सोचा है कि इस के बिना गुज़ारा तो है नहीं तो जिस भाव से या जिस प्रेम को लेकर कोई मेरे पास आता है मैं उस के

अनुसार उस को जवाब दे देता हूं मेरा कोई लगाव नहीं। फंसता नहीं, दिल नहीं देता, निष्काम भाव से कर्म करता हूं।

आप लोग आये हैं। अगर कुछ हासल करने के लिये आये हैं तो सत्संग में केवल समझ मिलती है। वो मैंने आप को बिल्कुल थोडे शब्दों में दे दी। पिछले चार सत्सगों में मैंने बहुत कुछ कह दिया। दरअसल बैसाखी के सत्संग वही हैं। जब तक लोगों का अपना चाल चलन अपना विचार ठीक नहीं है, कोई भी सरकार आ जाये देश में शान्ति नहीं ला सकती। जनता हो, जनसंघ हो, कांग्रेस हो कोई भी हो। और मैं इन गुरुओं इन महात्माओं को कहता हू कि पहले आप इन्सान बनो। हम गरीब जनता को अपनी जाती गर्ज और मान के लिये मत धोखा दो और फरेब करो।

सब को राधास्वामी

अपना कर्म भोग अथवा मौज मालिक

अब मैं 94 साल का होने वाला हूं पिछला सारा जीवन मेरे सामने आता है। राम को मिलने के लिए चला था। राम का पता लगा अपने घर का भी अनुभव हुआ। प्रारब्धकर्म या मौज आधीन मजबूरन घसीटा जा रहा हू।

जिन्दगी के अमली पहलू के तजुर्बे के बाद ख्याल आया कि जब तक इन्सान का इखलाक व नीयत साफ नहीं वो किसी सूरत में रूहानियत अथवा अनुभव या सारभेद या शांति कहलो प्राप्त नहीं कर सकता। इस शिक्षा के लिए मानवता मन्दिर की बुनियाद रखी थी कि सैंटर के बगैर गुजारा न था। ट्रस्ट के कानून के अनुसार जो दान यहां आता है वह उसी वर्ष में कुछ प्रतिशत रखकर सारा खर्च करना आवश्यक है। मौज या बदकिस्मती कहलो मेरी कि अमरीका से रामदेव राव ने चोहत्तर हजार पांच सौ

रुपया दान में भेजा। उसे खर्च करने के लिए इस वर्ष शिशु शिक्षा केन्द्र और छापा खाना खोले गये हैं। शिशु शिक्षा केन्द्र में निर्धन बच्चे लिए जाते हैं और उनसे कोई फीस नहीं ली जाती हैं। उनको वरदी भी दी जाती है। उनके माता पिता को लिखकर देना होता है कि वे तीन बच्चों से अधिक पैदा न करेंगे। जिन लोगों ने ऐसा लिख दिया हैं वे अपने बचन का पालन करेंगे या नहीं, इस विषय में कुछ कह नहीं सकता। जो मासिक पत्र व पुस्तकें ट्रस्ट छापता है उनका कोई मूल्य नहीं लिया जाता है। हमारी पुस्तकों का प्रकाशन पंजाबी, हिन्दी तथा अंग्रेजी तीन भाषाओं में होता है। इस समय अंग्रेजी की निम्नलिखित किताबें हैं।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manvata the true religion.
4. Religious Reserch. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in Ameriea.
14. Yogic Philosophy of Saints.

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1. अगम का भेद। 2) कबीर साखी।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7. ਨਾਮ ਦਾਨ

ट्रस्ट ऐलोपैथिक और होम्योपैथिक हस्पताल भी चला रहा है। इन सब कामों में बड़ा पैसा खर्च होता है। आमदनी को देखते हुये आगे ट्रस्ट का पता नहीं कि यह सभी सेवायें चला सके। ऐलोपैथिक दवाखाने की सहायता के लिये सरकार से सहायता चाही है पता नहीं क्या सरकार निर्णय करे? हो सकता है ऐलोपैथिक हस्पताल बन्द करना पड़े किन्तु शिशु शिक्षा केन्द्र तथा प्रकाशन चलता रहेगा। यथार्थ ज्ञान और साफ ब्यानों के कारण इतना धन नहीं आता। मानव मन्दिर की 3800 कापियां प्रतिमास जाती हैं किन्तु थोड़े लोगों ने ही उसके प्रकाशन में सहायता की है। बाकी मुफ्त का माल समझ कर मंगाते हैं। जिन लोगों की इच्छा साहित्य पढ़ने की है वे मंगवा सकते हैं। मेरी वर्णन शैली में रोचक तथा भयानक बातें नहीं। इसी कारण धन का अभाव है। मैं नहीं कहता कि आप लोग अवश्य ही मन्दिर की सहायता करें।

जो देता है उसको मिलता है। मानव मन्दिर भेजने में मेरा कोई एहसान नहीं। जो मुफ्त का

माल समझ कर मंगवाते हैं उनसे प्रार्थना है कि वे मंगवाना बंद कर दें ताकि हमारे खर्चे में कमी आवे। ट्रस्ट से अब तक गरीबों दुखियों व असमर्थ विद्यार्थियों को मासिक सहायता दी जा रही है लगता है वह भी बंद करनी पड़ेगी।

मैंने सोचा था कि अगर सत्य जो मैंने समझा है जिसकी पुष्टी कबीर साहब व स्वामी जी ने भी की है और जो इस सनातन धर्म की ऊंची शिक्षा के अनुसार भी ठीक है, समाज को इस शिक्षा से लाभ होगा, मगर मैं देखता हूं कि सच्चाई की लोगों को आवश्यकता नहीं। संसार को शांति व परमार्थ या यथार्थ ज्ञान नहीं चाहिए। मैं सोचता था इस सच्चाई से लोग अपना जीवन सफल बनाएंगे व शांति प्राप्त करेंगे मगर ऐसा नहीं हुआ।

बन्दनम्

चरण शरण की वन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे बख्श दो निज नाम॥
तेरी शरनागत हुआ फिर किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास॥
रूप ध्याऊँ नाम गाऊँ, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन॥
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरन लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरन तेरी आय॥
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग॥

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सतसँग
20-7-80 को होगा।

ADDRESS

To

1218. Shri [illegible] Guader Rao
Vill. [illegible] (Khurd)
P.O. Patikal Via Pitlam
Distt. Medak (AP)

VA - Pitlam

From:

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone: 2022